

B.A part-1

Paper-1

Unit-1

Topic name- ISOSTASY

पदार्थ वाली इल्की जड़ खनसूँयम में डें। और गडी ऊपर के पदार्थ में संकुचित
कर देती डें। इस आधार पर शयरी ने बताया छि जहाँ भाग अधिक ऊँचा होगा
उसका अधिक भाग खनसूँयम में होगा एवं कम ^{ऊँचा} भाग का कम भाग उजा रहेगा।

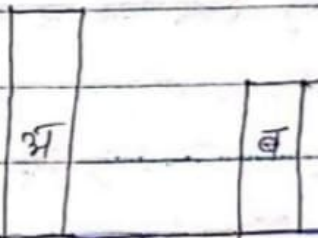
शयरी ने पुनः बताया छि विभिन्न स्तम्भों का माल
निराकर होना डें तथा उनकी गहराई में परिवर्तन होता डें। इस बात की पुष्पा-
णित करने के लिए शयरी ने लोहे के विभिन्न आकार तथा लंबाई के टुकड़े
लिए तथा ऊँचे पारें से भरें वेष्टिम में डुबो दिया। ये टुकड़े अपने आकार
के अनुसार क्रिमा-2 गहराई में डुबते गए।

सारांशतः शयरी के मत की इस प्रकार व्याख्या की जा
सकती डें कि ऊँचे उठे भाग काफी गहराई तक अपनी लम्बी जड़ से खनसूँयम
के अधिक घनत्व वाले भाग की डटा रहे डें, जिस कारण ऊँचे उठे भागों के
नीचे काफी गहराई तक डलके परापीन का निस्तार होता डें। ऐसा कर्तव्य के
विषय में होता डें। इस प्रकार ये संकुचित होकर पृथ्वी पर विस्तृत डें। इससे
निष्पन्न कम ऊँचे भाग कम गहराई में प्रविष्ट होते डें और वे अधिक घनत्व
वाले भाग की छोड़ी मात्रा में डटा पारें डें जबकि उठे नीचे खनसूँयम का
अधिक घनत्व वाला पदार्थ अधिक मात्रा में होता डें। इस प्रकार ऊँचे उठे
भाग तथा निचले भाग एक साथ संकुचित ^{होकर} रहते डें, उल्लेख भाग संकुचित तल
पर बरकर रखते डें।

प्राट की संकल्पना :->

प्राट महोदय ने कल्याण तथा कल्याणपुर के बिच
गए अक्षांशीय माप के अंतर (5.236") की पहने के बाद हिमालय की औसत
घनत्व 2.075 मानकर उसकी आकर्षण शक्ति की गणना करने ^{की में} पाया छि
यह अंतर 15.885" का होता था। प्राट ने हिमालय की चोटियों तथा समीप-
वर्ती मैदानों की चोटियों के अध्ययन के आधार पर बताया छि पहाड़ों का घनत्व
पहाड़ों से कम, पहाड़ों का मैदानों से कम, तथा मैदानों का घनत्व समुद्र तली
से कम होगा। अर्थात् ऊँचे एवं घनत्व में उल्टा अनुपात होता डें। प्राट

के अनुसार एक क्षतिपूर्ति तल होता है, जिसके ऊपर धक्के में अंतर पाया जाता है, तथा नीचे समान धक्के होता है। एक स्तम्भ में धक्के नहीं बढ़ता है, परन्तु एक स्तम्भ से दूसरे स्तम्भ में अंतर पाया जाता है। घाट ने Uniform depth with varying density का प्रतिपादन किया। घाट के अनुसार पृथ्वी में एक सीमित क्षेत्र होता है, जिसमें धक्के में अंतर पाया जाता है। क्षति-पूर्ति रेखा के सहारे धरमल के कारण क्षेत्र के नीचे कारण द्रव्यमान होना चाहिए, इसके एक उदाहरण में समझ सकते हैं।



क्षतिपूर्ति तल

उपर वाले चित्र में समतल रेखा के सहारे दो स्तम्भ हैं। अ गया व के धरातलीय क्षेत्र कारण हैं, परन्तु ऊपरी ऊँचाई में पर्याप्त अंतर है। लेकिन दोनों का भार संतुलन के लिए क्षतिपूर्ति रेखा के सहारे कारण होना चाहिए। इसके लिए अ स्तम्भ का धक्का कम तथा व स्तम्भ का धक्का अधिक होना चाहिए ताकि दोनों का भार संतुलन-रेखा पर कारण हो सके। इस प्रकार घाट के ऊँचा स्तम्भ अधिक कम धक्का, नीचा धक्का अधिक धक्का मत का प्रतिपादन किया। घाट के अनुसार धक्का में अंतर केवल स्थलमण्डल में होता है *Crustosphere* या *Geosphere* में नहीं।

बैरी ने बताया कि प्रथम रूप से तैरान के प्रश्न में घाट का विश्वास नहीं है लेकिन सहम रूप से देखने पर उससे कुछ मिलती है। साथ-ही-साथ जड़-कारण के कारण की मध्यम भी मिलती है। बैरी के अनुसार 'शरी' तथा 'घाट' के मनों में प्रमुख अंतर इस रूप में है कि शरी ने विभिन्न स्तम्भों को धक्का कारण बताया है।